1. शोध का शीर्षक
Research Topic

" अनुसूचित जनजातियों एवं गैर जनजातियों में प्रजननता दरों का तुलनात्मक अध्ययन "

(छ0ग0 के राजनांदगांव जिले के डोंगरगढ़ एवं मानपुर विकासखण्डों के विशेष संदर्भ में)

प्रस्तावना ::– विद्वानों का ऐसा अनुमान है कि आज से लगभग 20–30 लाख वर्ष पूर्व मानव का इस धरा पर प्रार्दुभाव हुआ था। प्रारंभ में सन् 1830 तक विश्व की कुल जनसंख्या केवल एक अरब थी, किन्तु अगले सौ वर्षो में ही अर्थात 1930 तक जनसंख्या दुगूनी हो गई, तात्पर्य यह है कि जितनी जनसंख्या वृद्वि लाखों वर्षो में हुई उतनी जनसंख्या मात्र 100 वर्षो में ही हो गई। जनसंख्या वृद्वि की यह दर और दोगुनी हो गई और अगली एक अरब की वृद्वि केवल 30 वर्षो में ही हो गई, इस प्रकार सन् 1960 तक तीनअरब नर–नारी इस धरती पर हो गए। अगले फिर 15 वर्षो में अर्थात सन् 1975 तक जनसंख्या बढ़कर 4 अरब हो गई, विश्व जनसंख्या में पुनः एक अरब की वृद्वि होने से केवल 12 वर्ष ही लगें 11 जुलाई 1987 को जनसंख्या 5 अरब हो गई तब से ही 11 जुलाई को प्रतिवर्ष विश्व जनसंख्या दिवस के रूप में मनाया जाता है।

मार्च 2007 में यू.एन.ओ. की रिपोर्ट में विश्व की मौजूदा जनसंख्या 6.7 अरब बताई गई है। अगले 2050 में जनसंख्या 9.1अरब रहने का अनुमान लगाया गया है। संयुक्त राष्ट्र संघ यू.एन.ओं. की रिपोर्ट में बताया गया है कि 2007 से 2050 के दौरान 43 वर्षो में विश्व की जनसंख्या 2.5 अरब की अपेक्षित वृद्वि अल्पविकसित देशों में जनसंख्या वृद्वि के चलते ही होगी। जनसंख्या के मामले में भारत का चीन के बाद दूसरा स्थान बना हुआ है किन्तु 2030 में चीन को पीछे छोड़कर भारत विश्व में सर्वाधिक जनसंख्या वाला देश होने का अनुमान है।

यद्यपि किसी भी देश का आर्थिक एवं सामजिक विकास उस देश की श्रमशक्ति या जन शक्ति पर निर्भर करता है। श्रम शक्ति उत्पादन का महत्वपूर्ण एवं सक्रिय साधन है। मानवीय संसाधन श्रम शक्ति का स्त्रोत होता है। किन्तु श्रम शक्ति का आधार यदि देश में उपलब्ध संसाधन की तुलना में अधिक हो जाये तो वह देश के लिए समस्या बनकर खड़ी हो सकती है।

2. पूर्व अध्ययन (शोध साहित्य का पूनरावलोकन) Raview of Literature

प्रजननता जनसंख्या वृद्वि के अध्ययन का महत्वपूर्ण घटक है प्रजनन एक जीव वैज्ञानिक प्रक्रिया है प्रजननता के संबंध में यद्यपि जनांकिकीयविदों द्वारा पर्याप्त अध्ययन हुआ है। जैसे – टिवार्थ(1953) कलार्क (1966) जेलिस्किी (1966) गार्नियर (1967) इत्यादि भूगोलवेत्ताओं ने प्रजननता का अध्ययन किया है।

पूर्व में भारत में अखिल भारतीय स्तर पर प्रजननता के आंकड़ो को प्राप्त करना कठिन रहा है, भारत में प्रजननता के अध्ययन के लिए सर्वप्रथम (1911) जनगणना के आंकडे एकत्रित किए गये परन्तु ये आकडे प्रजननता के अध्ययन के लिए पर्याप्त नहीं है। देश के विभिन्न क्षेत्रों की प्रजननता का अध्ययन विभिन्न विषयों के शोधकर्ताओं द्वारा किया गया है, जैसे जैन (1935) ने पंजाब में प्रजननता का आर्थिक एवं सामाजिक स्तर के साथ संबंध का विश्लेषण किया है। दांडेकर एवं दांडेकर (1953) ने पूना जिले की प्रजननता के अंतर्गत प्रजननता प्रतिरूप एक ग्रामीण–नगरीय प्रजननता को प्रस्तुत किया। हुसैन (1954) ने लखनऊ नगर के अध्ययन में एकाकी एवं संयुक्त परिवारों में प्रजननता का आंकलन किया। सोवानी एवं दांडेकर (1955) ने नासिक,सतारा और कोलाबा तीन समीपवर्ती जिले में ग्रामीणो एवं नगरीय दोनो क्षेत्रों में सकल पुनरूत्पादन एवं शुद्व पुनरूत्पादन दर की गणना की है,लिबेम्हाटाइन

(1957) ने बच्चों के लालन–पालन की लागत एवं प्रजननता के मध्य सह संबंध सिंद्वांत का प्रतिपादन किया है, दांडेकर (1959) ने पश्चिम भारत के 6 केन्द्रों की प्रजननता की प्रवृत्ति को बताया है।

प्रिन्सटन विश्वविद्यालय में भारतीय जनसंख्या एवं प्रजननता पर तीन महत्वपूर्ण अध्ययन किए सर्वप्रथम डेविस (1951) ने भारत एवं पाकिस्तान की जनगणना संबंधी आंकड़ों का विश्लेषण किया है। प्रजननता और सामाजिक तथा जनांकिकीय विशेषताओं की मध्य का अध्ययन किया। काल एवं हुवर (1958) ने भारत में जनसंख्या वृद्वि और आर्थिक विकास पर घटते हुऐ मृत्यू दर के संभावित प्रभाव को बताया । ड्राईव्हर (1963) ने नागपुर जिले के परिवारों का अध्ययन किया और आयु समूह के अनुसार प्रजननता में भिन्नता का आंकलन किया।

क्लार्क (1967) ने अर्द्वविकसीत देशों में ग्रामीण एवं नगरीय प्रजननता के साथ शिक्षा के संबंध पर प्रकाश डाला जैन (1967) ने प्रजननता स्तर पर परिवार नियोजन के महत्व को बताया। बोस (1970) ने ग्रामीण एवं नगरीय प्रजननता में भिन्नता का आंकलन किया। भामिक एवं उनके सहयोगियों (1971) में जनांकिकीय, आर्थिक एवं सामाजिक विशेषताओं शिक्षा एवं धर्म के अनुसार प्रजननता के अंतर का अध्ययन किया। ब्लासाफ (1980) ने ग्रामीण भारत में वृद्वावस्था में सुरक्षा अर्थात बच्चों की आर्थिक उपयोगिता और प्रजननता में मध्य संबंध का विवेकपूर्ण अध्ययन किया। सिंह (1986) पंजाब एवं हरियाणा के ग्रामीण समुदाय का अध्ययन किया जिसमें विवाह की आयु और प्रजननता के मध्य संबंध का आंकलन किया । चांदना एवं शर्मा (1987) ने प्रजननता के स्तर पर पुरूष एवं महिला दोनो की शिक्षा प्रभाव का अध्ययन किया । गोपालकृष्णन (1989) ने भारत के विभिन्न राज्यों में (1971–73 से 1983–85) के मध्य प्रजननता एवं मृर्त्यता की प्रवृत्ति को प्रस्तुत किया पंत (1982)ने महिला और जनसंख्या वृद्वि के मध्य संबंध का मूल्यांकन किया।

गुप्ता एवं बघेल (1992) ने मध्यप्रदेश में प्रादेशिक भिन्नता का अध्ययन किया। महिला साक्षरता, कुंल साक्षरता विवाह की आयु और शिशु दर के साथ प्रजननता के संबंध का विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया।

सिन्हा एवं कानिटकर (1994) में उड़ीसा के 80 गांवो की प्रजननता का अध्ययन किया। साक्षरता, प्राथमिकता स्वास्थ्य केन्द्र, बिजली, उपलब्धता और रेडियों की संख्या का प्रजननता के संबंध में ज्ञात किया थॉमस एवं जॉन (1955) ने भारत की 35 से कम और 35 वर्ष से अधिक उम्र की महिलाओं की प्रजननता और शिक्षा आय के साथ विस्तार पूर्वक वर्णन किया है।

गुप्ता एवं बघेल (1955) ने अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजति में प्रजननता के प्रतिरूप का विश्लेषण किया।श्री निवास(1995) ने भारत के विभिन्न राज्यों में प्रजननता प्रवृत्ति एवं प्रजननता को प्रभावित करने करने वाले प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष कारकों की विस्तृत व्याख्या की है जोशी (1996) में जनजातीय प्रजननता एवं विकास के संदर्भ में अध्ययन प्रस्तुत किया। केरल में जनांकिकीय परिवर्तन, परिणामों एवं महत्व के अध्ययन के लिए जाकरियाएवं राजन (1997) का कार्य उल्लेखनीय है। पुत्र की प्राथमिकता विश्व के अधिकतर हिस्सों में समान रूप से महत्वपूर्ण माना गया है पुत्र के लिए प्राथमिकता का प्रजननता व्यवहार तथा बाल मृत्यता एवं पड़ने वाले प्रभाव का विवेकपूर्ण विवरण अनार्ल्ड (1998) में प्रस्तुत किया।

राजाराम (2000) ने बाल मर्त्यता एवं प्रजननता के अर्न्तसंबंधों को सांख्यिकीय विश्लेषण की सहायता से सफल प्रयास किया है। जनसंख्या शिक्षा एवं अनुसंधान केन्द्र मंगोलिया द्वारा किये गये द्वितीय जनांकिकीय सर्वेक्षण के आंकड़ों के आधार पर जयलक्ष्मी एवं अन्य (2000) ने परिवार नियोजन की विधियों के ज्ञान, दृष्टिकोंण तथा व्यवहार का विश्लेषण किया है।

छत्तीसगढ़ के रायपुर संभाग के अनुसूचित जातियों एवं अनुसूचित जन जातियों में प्रजननता के स्तर,प्रजननता के विभिन्न निर्धारित कारकों की सापेक्षिक भूमिका परिवार नियोजन के प्रति इन समुदायों का दृष्टिकोण जागरूकता एवं परिवार कल्याण की विभिन्न गतिविधियों के अंगीकरण के स्तर पर विवेकपूर्व विश्लेषण बघेल (2002) ने किया है। भारत में हिन्दु एवं मुस्लिम जनसंख्या मे वृद्वि प्रजननता और परिवार नियोजन के अंगीकरण स्तर का रेड्डी (2003) ने भी जनसंख्या के निरोधक उपकरणों की आपूर्ति एवं आवश्यकता जानने के लिए गंभीरतापूर्वक अध्ययन किया है।

प्रोफेसर डी.एन.तिवारी योजना आयोग के पूर्व सदस्य ने योजना पत्रिका (2002) के माध्यम से जनसंख्या विस्फोट और कारगर विकास पर शोध आलेख प्रस्तुत किया है। जनसंख्या नियंत्रण और मानव संसाधन विकास की कुंजी (2002) विषय पर डॉ एम.एस.स्वामीनाथन अध्यक्ष फाउन्डेशन डॉ एम.एस स्वामीनाथन चेन्नई एवं योजना आयोग के पूर्व सदस्य ने प्रस्तुत किया। इन्स्टीट्यूट ऑफ इकॉनामिक ग्रोथ नई दिल्ली के मानद प्राध्यापक आशीष बोस ने जनसंख्या नियंत्रण,प्रगति एवं अवरोध विषय पर शोध आलेख प्रस्तुत कर जनसंख्या नियंत्रण हेतु प्रस्तावित कार्य योजना को मूर्तरूप देने का प्रयास किया है।

जनसंख्या नियंत्रण और मानव संसाधन विकास (2002) विषय पर एस.ए.कादर,उपमहानिर्देशक राष्ट्रीय उत्पादकता परिषद नई दिल्ली ने जनसंख्या नियंत्रण के लिए सरकारी और गैर सरकारी संगठनो के मौजूदा प्रयासों को और अधिक मजबूत करने पर बल दिया । डॉ नजमा हेपतुल्ला पूर्व उप सभापति राज्यसभा ने जनसंख्या नियंत्रण में महिलाओं की भूमिका (2002) विषय पर शोध आलेख तथा राष्ट्रीय पुस्तकालय के भूतपूर्व निर्देशक ने शिक्षा और जनसंख्या विषय पर शोध आलेख (2002) में सुझाव दिया कि व्यावसायिक शिक्षा के पुर्नगठन के लिए समानान्तर विश्वविद्यालय शिक्षा प्रणाली तैयार करनी होगी।

सुरिन्दर सूद कृषि सम्पादक बिजनेस स्टैण्डर्ड ने जनसंख्या और खाद्य सुरक्षा (2002) विषय पर संन्तुलित आहार पर ध्यान केन्द्रीत किया डॉ. राममिलन मिश्र सदस्य ग्रामीण संसाधन विकास संस्थान गोरखपुर (उ.प्र.) ने जनसंख्या संसाधन मूल्यांकन एवं प्रबंधन विषय पर शोध आलेख कुरूक्षेत्र 2005 में प्रस्तुत किया। डॉ एम.एस गिल भारत के पूर्व मुख्य चुनाव आयुक्त ने जनसंख्या वृद्वि परिसीमन का मुद्दा की समस्या पर योजना 2000 में चिंतन किया है डॉ नरेन्द्र सिंह और प्रमिल कुमार लेखक ने भारत में जनसंख्या की समस्या कारण और निवारण विषय पर शोध आलेख कुरूक्षेत्र जुलाई (2005) पत्रिका प्रस्तुत किया। मनीष कुमार सिन्हा स्वतंत्र पत्रकार ने कुरूक्षेत्र जुलाई (2005) पत्रिका में बढ़ती जन संख्या एक त्रासदी विषय पर शोध आलेख प्रस्तुत किया है।

डॉ रविशंकर जयुआर ने जनाधिक्य का गहराता संकट विषय पर शोध आलेख जुलाई (2005) पत्रिका में प्रस्तुत किया है गोधूली दूबे शोध छात्रा पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर छ0ग0 ने जनसंख्या तथा आर्थिक विकास पर अपना शोध पत्र प्रस्तुत किया है इन्स्टीट्यूट ऑफ इकॉनामिक ग्रोथ के मानद प्रोफेसर आशीष बोस ने जनगणना आयोग बनाने का सुझाव दिया है।

सुशीला सिंह बी.बी.सी. की संवाददादा नई दिल्ली ने दो बच्चों के नियम को लेकर विवाद विषय पर अपना विचार व्यक्त किया है। डॉ परशुराम तिवारी सदस्य सामुदायिक स्वास्थ्य क्षेत्र में मध्यप्रदेश के स्वैच्छिक संस्था ने जनसंख्या नीति पर एक बार फिर से सोचने की जरूरत विषय पर आलेख (2010) प्रस्तुत किया है।

विश्व विख्यात अर्थशास्त्री नोबेल पुरूस्कार विजेता अर्मत्य सेन ने जनसंख्या वास्तविकता विषय पर शोध आलेख (22 सिंतम्बर 1994) प्रस्तुत किया है अनूप शाह ने अन्य मुददो को प्रभावित करने और जनसंख्या द्वारा प्रभावित और बढती जनसंख्या विषय पर आलेख (मई 2001) प्रस्तुत किया है। अनुपशाह ने ही अधिक उपभोग के प्रभाव और बढ़ती जनसंख्या विषय पर आलेख प्रस्तुत किया है।

जनसंख्या वृद्वि और संसाधनो की कमी को लेकर फैलाई गई अफवाहें विषय पर राजकुमार साफटवेयर इंजीनियर गुडगांव ने आलेख 6 नम्बर 2011 प्रस्तुत किया।

3. **पूर्व के अध्ययनो में कमियां** Gaps in Earlier Studies

पूर्व के शोध अध्ययन में प्रजननता से संबंधित विभिन्न क्षेत्रों में क्षेत्रियता के आधार पर ग्रामीण, अर्धग्रामीण एवं अत्यंत पिछडे क्षेत्रों में प्रजननता का तुलनात्मक अध्ययन नहीं किया गया है। इसके अतिरिक्त विभिन्न आय समूहो के मध्य जनजातियों एवं गैर जनजातियों का तुलनात्मक अध्ययन भी नहीं हो पाया है अतः उक्त कमियों को पूरा करने हेतु प्रस्तुत शोध अध्ययन में विभिन्न क्षेत्रों में जनजातियों एवं गैर जनजातियों में आय, शिक्षा एवं व्यवसाय का प्रजननता दरों के मध्य संबंध का तुलनात्मक अध्ययन को प्रस्तुत किया जा सकेगा।

4. **समस्या का चुनाव** Statment of Problem :-

जनसंख्या और भौगोलिक दृष्टि से भारत एक बड़ा देश है आदिवासी जनसंख्या की दृष्टि से भारत, अफ्रीका प्रायद्वीप के बाद दूसरा स्थान रखता है। छत्तीसगढ़ आदिवासी बाहूल्य राज्य है, और छत्तीसगढ़

के राजनांदगांव जिले के मोहला मानपुर एवं अंबागढ़ चौकी विकास खण्ड में आदिवासी जनसंख्या बहुतायत निवासरत है। चूंकि आदिवासी बाहूल्य क्षेत्रों में प्रजननता दर की प्रवृत्ति अन्य क्षेत्रो से भिन्न रहीं है साथ ही पिछले जनगणना आंकड़ों में राजनांदगांव जिले के जनजातिय बाहूल्य क्षेत्रों में जनजातियां की प्रजननता दर बहुत अधिक रहीं है। उदाहरण के लिए अध्ययन क्षेत्रों आदिवासी विकास खण्ड मानपुर में 10 वर्षीय जनसंख्या वृद्वि 1991 से 2001 में 20.70 प्रतिशत गैर आदिवासी विकास खण्ड डोंगरगढ़ की 10 वर्षीय जनसंख्या वृद्वि (1991से 2001) 16.39 की तुलना में अधिक रहीं है। अतः इन क्षेत्रों में जनजातियों की उच्च प्रजननता दर एक महत्वपूर्ण समस्या है। इस उच्च प्रजननता दर की समस्या के कारणों की जानकारी प्राप्त करने हेतु राजनांदगांव जिले के जनजातियों एवं गैर जनजातियों में प्रजननता दरो की तुलनात्मक अध्ययन विषय पर शोध अध्ययन किया जाना प्रांसंगिक रहेगा।

अतः प्रस्तुत शोध अध्ययन में जनांकिकीय अध्ययन से अधिक माता अधिक प्रजननता दर को प्रदर्शित करती है और महिला बाहुल्य जनसंख्या में प्रजननता एवं जनसंख्या वृद्वि की तीव्रता एक सामान्य जैविक प्रकिया मानी गई है।

5. अध्ययन की प्रासंगिकता Relevance of the Study :-

यद्यपि किसी भी देश का आर्थिक एवं सामाजिक विकास उस देश की श्रम शक्ति या जन शक्ति पर निर्भर करता है श्रम शक्ति उत्पादन का महत्वपूर्ण एवं सक्रिय साधन है। मानवीय संसाधन श्रम शक्ति का स्त्रोत होता है। किन्तु श्रम शक्ति का आकार यदि देश में उपलब्ध संसाधन की तुलना में अधिक हो जाये तो वह देश के लिए समस्या बन कर खड़ी हो सकती है।

प्रजननता से समाज का अस्तित्व है किसी भी मनुष्य के जीवन मे माता पिता बनने से महत्वपूर्ण कोई घटना नहीं हो सकती है तथा किसी भी समाज में अस्तित्व को बनाऐं रखनें के लिए अपनी प्रजननता को पर्याप्त बनाये रखने से महत्वपूर्ण कोइ बात नहीं हो सकती है। (जनसंख्याविद् प्रोफेसर राईकर 1955) के अनुसार प्रजननता से आशय स्त्रियों द्वारा जन्म दिये गये जीवित शिशुओं की वास्तविक रूप व संख्या से है। जॉन वाकले के शब्दों में उर्वरता या प्रजननता की आधार भूत घटना एक जनसंख्या की उपलब्धि का वास्तविक स्तर है जो वास्तव में होने वाली जीवित शिशुओं की संख्या पर आधारित है।

प्रजननता एवं संतानोत्पादकता में अंतर प्रजननता से आशय वास्तव में बच्चो को जन्म देने एवं वास्तविक पुनरूत्पादन से है इसलिऐ उसे जीवित नवजातो की संख्या द्वारा मापा जा सकता है जबकि संतानोत्पादकता से युक्त स्त्रियों में ही प्रजननता हो सकती है अतः समस्त स्त्रियों को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है जैसे :–

1. वे स्त्रियां जिनमें संतानोत्पादकता शक्ति है तथा
2. वे स्त्रियां जिनमें संतानोत्पादकता शक्ति नहकीं है।

एक संतानोत्पादकता शक्ति से युक्त स्त्री के लिए इस बात की संभावना रहती है कि अपनी इस क्षमता को वास्तविक पुनरूत्पादन में परिवर्तित न कर सके। इसका कारण यह है कि प्रजनन स्त्री पुरूष की उर्वरता या प्रजननता पर निर्भर करती है यदि दोनो में से कोई भी पक्ष प्रजननता रहित होता है तो वह दूसरे पक्ष को प्रभावित करता है ऐसी स्थिति में एक पक्ष अयोग्यता दूसरे पक्ष को भी प्रभावित करती है वास्तविक पुनरूत्पादन के संदर्भ में स्त्रियों में प्रजनन क्षमता का पाया जाना निश्चित होता है लेकिन जो स्त्रियां वास्तविक पुनरूत्पादन नहीं कर सकती है उर्वरता या प्रजननता एवं निश्चित अवधि के बाद सीमित हो जाता है।

अतः इसके अध्ययन के क्षेत्र में दो महत्वपूर्ण प्रश्न उत्पन्न होते है पहला भारत में प्रजननता को प्रभावित करने वाले तत्व जैसे वैवाहिक स्तर, जनसंख्या का क्षेत्रीय विवरण,प्राकृतिक विवरण,जीवन स्तर रोजगार, धर्म एवं सामाजिक रीति रिवाज, सामाजिक गतिशीलता आदि एवं दूसारा–प्रजननता दर की माप जैसे – अशोधित जन्म दर, संशोधित जन्मदर,शिशु स्त्री अनुपात,सामान्य प्रजननता दर पूर्ण प्रजननता दर,समूह प्रजननता दर,प्रमाणित प्रजननता दर, सकल पुनरूत्पादन दर आदि।

6. शोध अध्ययन का उद्देश्य Objectives :–

इस विषय पर शोध का प्रमुख उद्देश्य छत्तीसगढ़ की ग्रामीण, अर्ध ग्रामीण एवं पिछड़े क्षेत्रों में अनुसूचित जन जातियों एवं गैर जनजातियों में प्रजननता प्रवृत्ति का दरों की स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन करना है। इस अध्ययन में आय प्रजननता, शिक्षा प्रजननता,व्यवसाय प्रजननता एवं विभिन्न आयु समूह का वैवाहिक जीवन की अवधि के मध्य प्रजननता का तुलनात्मक अध्ययन करना प्रस्तावित है। क्योकि भारत की भांति छ0ग0 में भी अन्य राज्यों के समान जनंसंख्या वृद्वि की प्रवृत्ति अधिक तीव्र रहीं है। जहां पुरूषों की आनुपारिक जनसंख्या अधिक है। लेकिन छ0ग0 क्षेत्र का राजनांदगांव जिले की लिगांनुपात की प्रवृत्ति भारत एवं अन्य अधिकांश राज्यों व जिलों की तुलना में विपरीत रहीं है।

अतः जनांकिकीय एवं प्रजननता अध्ययनों से स्पष्ट होता है कि अधिक माताऐं अधिक प्रजननता को प्रदर्शित करती है और स्त्री बाहूल्य जनसंख्या में प्रजननता प्रवृत्ति तथा जनसंख्या वृद्वि की तीव्रता एवं सामान्य जैविक प्रक्रिया मानी गई है इस बात का अध्ययन करनेके लिऐ हमने छ0ग0 प्रदेश के राजनांदगांव जिले का मानपुर आदिवासी विकास खण्ड डोंगरगढ गैरजनजाति विकास खण्ड को अध्ययन क्षेत्र के रूप में चयन किया है।

अतः प्रस्तुत शोध अध्ययन में निम्नांकित उद्देश्यों को रेखांकित किया गया है :–

1. राजनांदगांव जिले की ग्रामीण जनसंख्या में प्रजननता प्रवृत्ति दर का आंकलन करना ।
2. जनजातियों एवं गैर जनजातियों की प्रजननता प्रवृत्ति दरो में अंतर ज्ञात करना।
3. प्रजननता दर को प्रभावित करने वाले शैक्षणिक, सामाजिक एवं आर्थिक कारणों का विश्लेषण करना।
4. अध्ययन क्षेत्रों में परिवार नियोजन कार्यक्रमों का प्रजननता दर पर पड़ने वाले प्रभाव को ज्ञात करना।
5. अध्ययन क्षेत्र में ग्रामीण एवं अर्ध नगरीय जनसंख्या में प्रजननता प्रवृत्ति के अंतर का विश्लेषण करना।
6. शिक्षा आय एवं व्यवसाय के साथ प्रजननता दर की स्थिति का आंकलन करना।

7. **परिकल्पना Hypotheses** ::–

प्रस्तुंत शोध अध्ययन में निम्नांकित परिकल्पनाओं की प्रत्याशा की गई है:–

1. अनुसूचित जनजातियों में गैर जनजाति की तुलना में प्रजननता दर अधिक पाई जाती है।
2. शिक्षा का स्तर एवं जीवन स्तर में वृद्वि के साथ प्रजननता दरों मे कमी आती है।
3. उच्च शिशु मृत्यू दर एव प्रजननता दर के मध्य सकारात्मक संबंध होता है।

7. शोध अध्ययन विधि एवं अध्ययन क्षेत्र Research Methodology & Area of Study :–

प्रस्तुत शोध अध्ययन में जनजातियों एवं गैर जन जातियों की प्रजननता स्थिति को व्यक्त करने के लिए समंक संकलन हेतु द्वितीयक आंकड़ों के साथ–साथ प्राथमिक समंक एकत्रित करने हेतु दैव निर्दशन विधि या रेण्डम विधि का उपयोग किया जावेगा। न्यादस या निदर्शन केवल महिलाओं के ही लिये जावेंगें। आवश्यकतानुसार सांख्यकी उपकरणों का उपयोग कर माध्य, सह–संबंध, प्रतीपगमन एवं काई वर्ग परीक्षण से जनजातियों एवं गैर जनजातियों में प्रजननता का आंकलन एवं विश्लेषण किया जयेगा।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में अध्ययन क्षेत्र के समंक संकलन हेतु जिले के दो विकास खण्ड का चयन कर प्रत्येक विकास खण्ड से चार ग्राम पंचायत को लिया जाएगा। इन ग्राम पंचायतो के चयन का आधार उनके साक्षरता दर. ऊर्जा संसाधन की उपलब्धता, सिंचाई के साधन, विकास खण्ड मुख्यालय से पहुंच की दूरी, स्वास्थ्य केन्द्र की उपलब्धता व आवासीय मकानों में शौचालय की उपलब्धता के विकास मापदण्ड के आधार पर किया जावेगा। इस प्रकार उपरोक्त सुविधाओं के सर्वाधिक उपलब्धता एवं विकास खण्ड मुख्यालय से सबसे कम दूरी वाली पंचायत को विकसित ग्राम पंचायत तथा इसी प्रकार विकास के मापदण्ड के आधार पर अपेक्षाकृत अर्द्व –विकसित एवं विकास– खण्ड मुख्यालय से थोडी दूर वाले पंचायत को मध्यम विकसित ग्राम पंचायत एवं सबसे कम उपरोक्त सुविधाओं की उपलब्धता वाली पंचायत को दूरांचल विकास की दृष्टि से अत्यंत पिछड़ी ग्राम पंचायत का चयन किया जाएगा दोनो विकास खण्डों में ग्राम पंचायत के चयन के पश्चात् ग्राम पंचायत में उपलब्ध परिवारो की सूची ग्राम पंचायत के सचिव या सरपंच से प्राप्त कर ग्राम पंचायत के जनसंख्या के अनुपात में क्रमानुसार (प्रत्येक तीसरे या चौथे परिवार से)

प्रत्येक ग्राम पंचायत से 200 परिवारों से आंकड़ें एकत्र किये जायेगें इस प्रकार प्रत्येक विकास खण्ड से कुल 800 परिवारों का आवश्यकतानुसार प्रश्नावली एवं अनुसूची के माध्यम से आंकड़ें एकत्र किये जायेगें। इस प्रकार दोनों विकास खण्ड से कुल 1600 परिवारों से आंकड़े प्राप्त कर आदिवासियों एवं गैर आदिवासियों में प्रजननता दरों का तुलनात्मक आंकलन एवं विश्लेषण किया जावेगा। आदिवासी बाहुल्य मानपुर विकास खण्ड से 80 प्रतिशत जनजातीय परिवार एवं 20 प्रतिशत गैर जनजातीय परिवार तथा गैर आदिवासी या सामान्य विकास खण्ड डोंगरगढ़ से 80 प्रतिशत गैर जनजातीय व 20 प्रतिशत जनजातीय परिवार से आंकडे प्राप्त किये जायेगें। प्राप्त संमको को विभिन्न आधारों पर वर्गीकरण एवं सारणीयन कर विश्लेषण से प्राप्त परिणामों के आधार पर शोध कार्य सम्पन्न किया जावेगा।

अध्ययक्ष क्षेत्रः–

प्रस्तुत शोध कार्य हेतु शोध क्षेत्र का चयन छत्तीसगढ़ के ग्रामीण बाहूल राजनांदगांव के दो विकास खण्डों को चयन किया गया है। जनजातियों के प्रजननता दरो के अध्ययन हेतु आदिवासी बाहूल मानपुर विकास खण्ड एवं गैर जनजातियों की प्रजननता दरो के अध्ययन हेतु डोंगरगढ़ सामान्य विकास खण्ड का चयन किया गया है इन दोनो विकास खण्ड के संबंध में संक्षिप्त विवरण निम्नानुसार हैः––

1. आदिवासी विकास खण्ड मानपुर :–

यह राजनांदगांव जिले के दक्षिण दिशा में जिले की सीमा के अंतिम छोर पर स्थित है । आदिवासी बाहुल्य विकास खण्ड होने के साथ ही लिंगानुपात की दृष्टि से भी जिले के अनुरूप महिला बाहूल्य विकास खण्ड है। जनगणना 2011 के अनुसार यहां स्त्री–पुरूष अनुपात 1005 है । मानपुर विकास खण्ड का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 89619 वर्ग कि. मीटर है । इस विकास खण्ड में कुल 170 ग्राम एवं आबाद ग्राम 169 है। यहां ग्राम पंचायत की संख्या 52 है । यहां कुल जनंसख्या 88619 है जिसमं 44387 पुरूष एवं 44232 महिला है । तथा इस विकास खण्ड में अनुसूचित जातियों की जनसंख्या प्रतिशत 5.12 % है जिसमें 20.63 प्रतिशत पुरूष एवं 2.49 प्रतिशत महिला है जबकि अनुसूचित जनजातियों की जनसंख्या 74.39 प्रतिशत है जिसमें 36.3 प्रतिशत पुरूष एवं 37.75 प्रतिशत महिला है।

साक्षरता :–

मानपुर विकास खण्ड में साक्षरता का प्रतिशत 61.78 प्रतिशत है जिसमें 70.45 प्रतिशत पुरूष एवं 53.08 महिला साक्षर है । इस विकास खण्ड का जनसंख्या घनत्व 86 प्रति वर्ग मीटर है।

2. सामान्य या गैर आदिवासी विकास खण्ड डोंगरगढ़ :—

छत्तीसगढ़ प्रदेश के महाराष्ट्र सीमा पर स्थित डोंगरगढ़ विकास खण्ड है। लिगांनुपात की दृष्टि से जिले के अनुरूप ही यहां भी महिलाओं की संख्या जनगणना 2011 के अनुसार पुरूष से अधिक है, अर्थात डोंगरगढ़ विकास खण्ड की कुल जनसंख्या 208117 है, जिसमें 103321 पुरूष एवं 104796 महिला है । विकास खण्ड की कुल जनसंख्या में 23885 अनुसूचित जाति (11.50 प्रतिशत) तथा 53513 अनुसूचित जनजातियों (25.71 प्रतिशत) की जनसंख्या है । इस प्रकार डोंगरगढ़ विकास खण्ड में गैर जनजातियों की जनसंख्या लगभग 75% है डोंगरगढ़ का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 765.53 वर्ग किलोमीटर है।

साक्षरता:—

डोंगरगढ़ विकास खण्ड में साक्षरता का प्रतिशत 65.69 प्रतिशत है जिसमें 36.47 प्रतिशत पुरूष एवं 29.22 प्रतिशत महिला साक्षर है। यहां जनसंख्या घनत्व 186 प्रतिवर्ग किलोमीटर है।

9. शोध अध्ययन का प्रारूप या अध्यायों का विभक्तिकरण :– Plan of The Study :-

प्रस्तुत शोध अध्ययन को छः अध्यायों में विभाजित किया गया हैः–

अध्याय–1(अ) प्रथम अध्याय के इस भाग में शोध अध्ययन का महत्व उदृेश्य, परिकल्पना, शोध सहित का पुनरावलोकन, अध्ययन विधि एवं अध्ययन क्षेत्र को शामिल किया जावेगा।

(ब) प्रथम अध्याय के इस भाग में प्रजननता से आशय, कारण, उदृेश्य प्रांसगिकता एवं प्रजननता के प्रभावित करने वाले तत्व प्रस्तुत किया जावेगा।

अध्याय–2 द्वितीय अध्याय मे राजनांदगांव जिले के आर्थिक, सामाजिक एवं जनांकिकीय संरचना के साथ–साथ दोनो विकास खण्डो के आर्थिक,सामजिक,एवं भौगोलिक संरचना को भी प्रस्तुत किया जावेगा।

अध्याय–3 तीसरे अध्याय में अध्ययन के लिए लिये गये परिवारो के सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक पृष्ठ भूमि को स्पष्ट किया जावेगा।

अध्याय–4 चौथे अध्याय में प्रजननता के कारण,प्रभाव तथा प्रजननता दरों में उच्चवाचन की स्थिति का अध्ययन किया जावेगा । साथ ही प्रजननता के विभिन्न दरों तथा उसको प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन किया जाऐगा।

अध्याय–5 पांचवें अध्याय में शासकीय परिवार कल्याण योजनाओं तथा प्रजननता दरो में कमी एवं अन्य प्रभाव को स्पष्ट किया जोवगा

अध्याय–6 प्रस्तुत शोध अध्ययन के छठवें अध्याय में शोध के निष्कर्ष शोध से संबंधित समस्याओं और उस पर नियंत्रण के उपायों के साथ सुझााव को प्रस्तुत किया जावेगा।

टीपः– शोध प्रबंध का आगे बढ़ने के साथ साथ आवश्यकतानुसार नवीन तथ्यों एवं विषयों को जोड़ा जा सकेगा। तथा अध्यायों के कम में समुचित परिवर्तन किया जावेगा।

—:: 10 संदर्भ ग्रंथ एवं सूची ::—

1. Agrawal S.N.(1962) Age at marriage in India, Kitab Mahal Private ltd.

2 Agrawal S.N.(1964) Social and cultural factor affecting fertility in India, Population review vol. 8 pp 73-74

3. Agrawal S.N.(1970) Avdemograpic study six urbanizes vil lages, Asia publishing house, Bombay

4. Agrawal S.N.(1977) India's population problem, tata Mc Grow hill publication Co Ltd. Bombay

5. Ahmed Shakeel(1989) Fertility trends and population policy in India, vohra publisher and Distributor Allahabad.

6. ANkur R and M ankur (1982) Reproduction behavior Household in rural Gujrat Social- economic and community factor, concept publishing

7. Arokiasam P(1997) Poverty, Nutritious and ds fertility B.R. publishing Corporation Delhi.

8. Bandenhorst L.T.(1952) Territorial differention fertility in the union of South Africa, 1911-1936 population Studies vol 5 no 2

9. Barclay Georeg W (1966) Technique of population analy sis john wiley and Son, the Nwe york.

10. Amald Fetal (1988) Son prefemce The Family Bulding process and Child mortality in india population studies vol 52 PP 301 & 305

11. **माथुर आर.एन.** :— पॉपूलेशन इनालिसिस एंड स्टडीज प्रकाशन इलाहाबाद 1986

12. **ड्राईवर ए.ई.डी** :— फर्टीलिटी इन सेन्ट्रल इंडिया एप्रिन्स्टन युनिवर्सिटी प्रेस ए 1963

13. **मामोरिया सी.वी** :— इंडिया पॉपूलेशन किताब महल 1961

14. **चन्द्रशेखर एस** :— भारत की जनसंख्या समस्या तथा नीति मीनाक्षी प्रकाशन मेरठ 1961

15. **श्रीवास्तव एस.सी** :— जनांकिकीय सिद्वांत तकनीकी अध्ययन शिक्षा साहित्य प्रकाशन मेरठ

16. **श्रीवास्तव ओ.एस** :— आर्थिक एवं सामाजिक जनांकिकीय सिद्वांत विवेक प्रकाशन दिल्ली 1961

17. **नागर कैलाशनाथ** :— सांख्यिकी के मूल तत्व मीनाक्षी प्रकाशन मेरठ 1977

18. **नाग डी.एस** :— अल्पविकसित अर्थ व्यवस्था की समस्याऐं लक्ष्मीनारायण अग्रवाल प्रकाशन 1974

19. **शुक्ला डॉ. शान्ता** :— छत्तीसगढ़ का सामाजिक, आर्थिक इतिहास नेशनल पब्लिक हाउस दिल्ली 1988

20. **सुन्दरम रूद्रदत्त** :— भारतीय अर्थ व्यवस्था एस.चांद एण्ड कम्पनी नई दिल्ली

21. **पालीवाल चन्द्रमोहन** :— आदिवासी हरिजन आर्थिक विकास नार्दन बुक सेन्टर इलाहाबाद

22.	**संदर्भ छत्तीसगढ**	:–	देशबंधु प्रकाशन रायपुर
23.	**सांक्ष्यिकीय प्रकाशन :**	–	जिला सांख्यिकीय कार्यालय राजनांदगांव
24.	**पटवारी रिपोर्ट**	:–	तहसील कार्यालय मानपुर एवं डोंगरगढ़
25.	**कृषि विकास विस्तार अधिकारी रिकार्ड**	:–	विकास खण्ड कार्यालय मानपुर एवं डोंगरगढ़
26.	**जिला सांख्यिकी पुस्तिका वर्ष 2011**	:–	कार्यालय जिला सांख्यिकी एवं योजना राजनांदगांव
27	**प्रतियोगिता दपर्ण**	:–	जुलाई 2011
28.	**जनगणना 2011**	:–	जनगणना कार्य निर्देशालय रायपुर

डॉ.आर.एन.सिंह
शोध–निर्देशक
प्राचार्य
शास.दिग्विजय स्वाशासी स्नातकोत्तर
महाविद्यालय,राजनांदगांव (छ0ग0)

राजूराम कोचे
प्रस्तुतकर्ता शोधार्थी
सहा.प्राध्यापक (अर्थशास्त्र)
शास. नेहरू स्नातकोत्तर महाविद्यालय
डोंगरगढ़(छ0ग0)

//शोध केन्द्र //
शासकीय दिग्विजय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय
राजनांदगांव जिला राजनांदगांव (छ0ग0)

22. संदर्भ छत्तीसगढ :– देशबंधु प्रकाशन रायपुर

23. सांक्ष्यिकीय प्रकाशन : – जिला सांख्यिकीय कार्यालय राजनांदगांव

24. पटवारी रिपोर्ट :– तहसील कार्यालय मानपुर एवं डोंगरगढ़

25. कृषि विकास विस्तार अधिकारी रिकार्ड :– विकास खण्ड कार्यालय मानपुर एवं डोंगरगढ़

26. जिला सांख्यिकी पुस्तिका वर्ष 2011 :– कार्यालय जिला सांख्यिकी एवं योजना राजनांदगांव

27 प्रतियोगिता दपर्ण :– जुलाई 2011

28. जनगणना 2011 :– जनगणना कार्य निर्देशालय रायपुर

डॉ.आर.एन.सिंह
शोध–निर्देशक
प्राचार्य
शास.दिग्विजय स्वाशासी स्नातकोत्तर
महाविद्यालय,राजनांदगांव (छ0ग0)

राजूराम कोचे
प्रस्तुतकर्ता शोधार्थी
सहा.प्राध्यापक (अर्थशास्त्र)
शास. नेहरू स्नातकोत्तर महाविद्यालय
डोंगरगढ़(छ0ग0)

अनुशंसित

प्राचार्य
शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय
राजनांदगांव (छत्तीसगढ़)

//शोध केन्द्र//
शासकीय दिग्विजय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय
राजनांदगांव जिला राजनांदगांव (छ0ग0)